Instructions on how to write Likhita Japa

- Before or after meals, during day or night, in all conditions and at all times, when time is available, one can write the Divine Name.
- When writing, do not look here and there. Do not talk, do not deviate from your object. Thought, action and utterance should be united and pure.
- With lot of enthusiasm, happiness, devotion and faith, one should write the Divine Name. One should not consider this as a burden or imposed duty and feel irritated.
- Handwriting should be neat and arousing joy when looked at. Devotion is more important than the number.
- With selfless mind, one should consider this as a service unto the Lord and perform it with complete dedication.
- After completion of a Rama Koti book, if one has an opportunity, a holy person should be fed.
- After completion of each book, one has to offer the Likhita Japa mentally unto the Lord, and keep it in their Puja room and worship it like the Chosen Deity.

RÃMA KOTI

A book for Likhita Japa

राम

Published by The Saranaagathi Team
http://saranaagathi.wordpress.com

॥ ॐ श्री रामचन्द्राय नमः ॥

सप्त कोट्यो महामन्त्राश्चित्त विभ्रमकारकाः ।
एक एव परो मन्त्रो 'राम' इत्यक्षरद्वयम् ॥

अर्थः- सप्त करोड मंत्र हैं, वे चित्त को भ्रमित करने वाले हैं। दो अक्षरों वाला 'राम' नाम परम मंत्र हैं। सब मंत्र और सब शक्तियाँ इसमे अन्तर्गत हैं।

राम नाम का लेखन सबको प्यारा ।
राम नाम का लेखन दुख मेटन हारा ।।

राम नाम से बेडा पार । लिखो नाम सहित परिवार ॥
राम नाम तेरा आधार । राम सुमर उतरो भव पार ॥
राम नाम को जो नर गावे । बिनु प्रयास सो हरि पद पावे ॥
राम नाम जो कहे कहावे । राम कृपा से भक्ति पावे ॥
राम नाम में जो मन लावे । ताकी महिमा कौन बतावे ॥
राम नाम ही पितु महतारी । लिखो राम नाम सुखकारी ॥

राम नाम जप रे मना, करो राम संग प्रीत ।
बिना नाम श्री राम के, कौन तुम्हारो मीत ॥
राम नाम जप रे मना, थोडा जीना भाई ।
बिनु सुमिरन श्री राम के, जन्म अकारथ जाई ॥
राम नाम जप रे मना, राम ही अंत सहाई ।
राम बिना सब झूठे नाते, मात पिता अरु भाई ॥
राम नाम का सुन्दर लेखन, करो चित्त मनलाय ।
सिद्ध होय मन कामना, अंत मुक्ति को पाय ॥
राम नाम भज रे मना, राम नाम आधार ।
बिनु सेवन हरि नाम के, धिग जीवन संसार ॥

॥ ॐ श्री रामचन्द्राय नमः ॥

जबहि नाम हृदय धर्यो, भयोपाप को नाश ।
मानो चिगनी आग की, पडी पुरानी घास ॥

चारों वेद ढढोर के, अन्त कहोगे राम ।
सो रज्जब पहले कहो, एते ही में काम ॥

नाम लेने का मजा, जिसकी जबां पर आ गया ।
वो जीवन्मुक्त हो गया, चारों पदारथ पा गया ॥

गुप्त अकाम निरन्तर, ध्यान सहित सानन्द ।
आदर जुत जप से तुरत, पावत परमानन्द ॥

बार बार यह देह नहिं, औरे देह घनी ।
नितानन्द इस देह में, सुमिरो रामधनी ॥

पांव पसारे क्या पड्या, प्रभु का नाम संभाल ।
तिन के सोये क्या बने, जिनके सिर पर काल ॥

नितानन्द हर सुमिर में, कभी न कीजै ढील ।
पल में यम ले जायेंगे, यथा सरप कूं चील ॥

नितानन्द गोविन्द ने, दीन्ही दुर्लभ देह ।
राम भजे तो रतन है, नहीं खेह की खेह ॥

एक पलक के भजन पर, तुले सर्व संसार ।
नितानन्द तिस नाम की, महिमा अगम अपार ॥

बिना शरण भगवान की, रे जिव कहीं न चैन ।
सुमर सनेही आपना, नितानन्द दिन रैन ॥

दुख-भंजन मंगळ करण, सिमर हरण हरि नाम ।
ज्ञान प्रकाशन सुख करण, नितानन्द भज राम ॥

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम

राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम	राम